𑀧𑀼𑀭𑀸𑀧𑁆𑀭𑀯𑀸𑀳
पुराप्रवाह

क्रमांक 4

2019

भारतीय पुरातत्व परिषद्, नई दिल्ली

COMPLIMENTARY COPY

𑀧𑀼𑀭𑀸𑀧𑁆𑀭𑀯𑀸𑀳
पुराप्रवाह

क्रमांक 4 2019

भारतीय पुरातत्त्व परिषद् की शोध पत्रिका

संपादक

बुद्धरश्मि मणि • आशा जोशी

उपसंपादक

अंकित अग्रवाल

भारतीय पुरातत्त्व परिषद्
नई दिल्ली

भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, नई दिल्ली

प्रबंधक मंडल

अध्यक्ष
ओ० पी० टंडन

उपाध्यक्ष
बी० आर० मणि
वी० एच० सोनावाने

महासचिव
के० एन० दीक्षित

कोषाध्यक्ष
एस० एस० विश्वास

सदस्य
आर० डी० चौधरी
वी० डी० मिश्रा
चम्पत राय
आर० के० चड्डा

संपादक मंडल

प्रो० टी० पी० वर्मा (अवकाश प्राप्त)
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ० राकेश तिवारी (अवकाश प्राप्त)
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली

प्रो० सुष्मिता पांडे (अवकाश प्राप्त)
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

प्रो० डी० पी० तिवारी
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार

प्रो० विनोद नौटियाल
एच० एन० बी० गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर

प्रो० ए० के० सिंह
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

प्रो० विभा त्रिपाठी (अवकाश प्राप्त)
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रो० जे० एन० पाल (अवकाश प्राप्त)
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो० यू० पी० अरोड़ा (अवकाश प्राप्त)
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली

प्रो० आर० एन० सिंह
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रो० के० टी० एस० सराओ
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो० पी० पी० जोगलेकर
डेक्कन कॉलेज पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट, पुणे

© भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, नई दिल्ली, 2019

पुराप्रवाह, वार्षिक शोधपत्रिका

मूल्य: ₹2000/–

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक और प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पुराप्रवाह *विद्वतजनों द्वारा अवलोकित* (Peer Reviewed) है।

प्रकाशक: भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, बी–17, कुतुब इंस्टिट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली 110016
दूरभाष: 011- 26852695, 26523728 ईमेल: iasnewdelhi1967@gmail.com
वेबसाइट: http:www.indarchaeology.org

शोधपत्र/आलेख, पुस्तक समीक्षा आदि प्रकाशन के लिए संपादक–पुराप्रवाह, भारतीय पुरातत्त्व परिषद् बी–17, कुतुब इंस्टिट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली 110016 को भेजे जाएँ।

ISSN 2454-8014

9 772454 801007 00

ISSN No. 2454-8014

प्रस्तुत: वेप इंटरप्राइजेज, दूरभाष: 91 11 41755660 ईमेल: vapenterprises@gmail.com एवं *मुद्रण:* मल्टीकलर सर्विसेज, ओखला, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली 110020

आवरण पृष्ठ: शालभंजिका, ग्यारसपुर, जिला विदिशा, 10वीं शताब्दी (गुजरीमहल संग्रहालय, ग्वालियर)

अनुक्रमणिका

पुरोवाक्

संपादकीय

महाराष्ट्र के सतारा जिले में स्थित निम्न–पुरापाषाणकालीन (एश्युलियन) स्थलों का नव–अध्ययन 1
जयेन्द्र जोगलेकर एवं सुषमा जी० देव

बिहार की नवपाषाण कालीन मृद्भांड परंपराओं का अध्ययन 8
दीपक कुमार राय

प्रागैतिहासिक जीवन का अवलोकन 19
संजय कुमार कुशवाहा

कैमूर पहाड़ी (बिहार) की बृहत्पाषाणिक समाधियाँ और जनजातीय संस्कृति 29
श्याम सुंदर तिवारी

राजगीर का पुरातत्त्वः प्रागैतिहासिक काल से बारहवीं शताब्दी तक 42
किशोर कुमार

प्राचीन छत्तीसगढ़ के अभिलेखों में 'रामायण' एवं 'महाभारत' संबंधी संदर्भः एक विवेचन 52
सुजीत कुमार तिवारी

बौद्ध–भिक्षुणी संघ का विकास एवं प्रसार 59
राघवेन्द्र प्रताप सिंह

मोरेना (मध्य प्रदेश) में नरेसर के मंदिर एवं अभिलेख 64
अरविन्द कुमार सिंह

दमोह जिले की विशिष्ट प्रतिमाएँः शिल्पशास्त्रीय अवलोकन 76
सुरेन्द्र कुमार यादव

कुषाणकालीन देवकुल एवं उनसे प्राप्त मूर्तियाँ 85
विंध्यवासिनी

दमोह जिले की विशिष्ट प्रतिमाएँ: शिल्पशास्त्रीय अवलोकन

सुरेन्द्र कुमार यादव*

बुंदेलखंड के विंध्यपर्वत माला की सुरम्य उपत्यकाओं में बसी दमोह नगरी अपने सांस्कृतिक परंपराओं एवं ऐतिहासिक धरोहरों लिए महत्वपूर्ण रही है। इस अंचल को गुप्त, कलचुरि, राष्ट्रकूट, प्रतिहार, चंदेल एवं परमार राजवंशों ने अपने शौर्य, पराक्रम, रचनात्मक क्रियाकलापों एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से स्पंदित करते हुए संरक्षण प्रदान किया। जिसके फलस्वरूप इस क्षेत्र में वैष्णव, शैव, शाक्त, सौर एवं जैन संप्रदाय को प्रश्रय मिला और उससे संबद्ध अनेक देवालयों एवं प्रतिमाओं का निर्माण हुआ। ये सभी क्रियाकलाप इस क्षेत्र को एक संपदावान नगरी के रूप में स्थापित करते हैं। दमोह जिले के विविध अंचलों में नोहटा, कोडल, रनेह, सकौर, दौनी एवं कुंडलपुर आदि जैसे धार्मिक स्थल समृद्ध हुए। इस क्षेत्र के विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प को राज्य पुरातत्त्व संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है। इस संग्रहालय को 'रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय' के नाम से भी जाना जाता है। किंवदंतियों एवं जनश्रुतियों से जनमानस में यह धारणा व्याप्त है कि इस नगर की स्थापना राजा नल की पत्नी दमयंती द्वारा की गई है। यह क्षेत्र धार्मिक रूप से शैव प्रधान रहा है, किंतु अंचल के शासकों की धार्मिक सहिष्णुता के कारण वैष्णव, शाक्त एवं जैन संप्रदायों को भी समान रूप से विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ। यहाँ से प्राप्त पुरावशेष विविध संप्रदायों के विकास की गौरवशाली परंपरा के द्योतक हैं। ये कलाकृतियाँ कला वैभव के साथ–साथ उनमें लोक–मानस एवं जनश्रद्धा के भाव को भी प्रेषित करती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र मुख्यतः रानी दमयंती पुरातत्त्व संग्रहालय' दमोह में प्रदर्शित मूर्तिशिल्प एवं क्षेत्र में सर्वेक्षण से उपलब्ध कुछ विशिष्ट प्रतिमाओं के अध्ययन पर आधारित हैं। इस संग्रहालय में गजांतक, सरस्वती, अभिज्ञान राम एवं बुद्ध की प्रतिमाएँ प्रदर्शित हैं। साथ ही क्षेत्र में पुरातात्त्विक सर्वेक्षण से हरिहरार्क की दो विशिष्ट प्रतिमाएँ भी प्रकाश में आई।

गजांतक प्रतिमा

भारतीय कला में शिव के विराट स्वरूप के अनेक आयाम हैं, जिसमें सामान्यतः शिव का सौम्य एवं संहार स्वरूप विशेष उल्लेखनीय है। शिव का संहार स्वरूप भी लोक कल्याण के निमित्त धारण किया गया था। शिव के संहार रूप में, गजांतक प्रतिमा उनके अनुग्रह व संहारकर्ता के रूप में भी निरूपित है। पौराणिक कथा के अनुसार शिव ने गजासुर नामक असुर का वध किया था तथा उसके चर्म को स्वयं ओढ़ लिया था। यह कथा अलग–अलग रूपों में कूर्म पुराण,

* असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रा० भा० इ० सं० एवं पुरातत्त्व विभाग, हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश

शिव पुराण, वराह पुराण, मत्स्य पुराण तथा ब्रह्मांड आदि पुराणों में वर्णित है। कूर्म पुराण में इस कथा का प्रारंभिक उल्लेख मिलता है, जिसमें एक बार जब काशी का एक ब्राह्मण कृत्तिवासेश्वर लिंग की अर्चना कर रहा था, तो एक असुर गज में रूप में आकर बाधा उत्पन्न करने लगा अतः शिव ने भक्त रक्षा हेतु प्रकट होकर दैत्य का संहार किया और साथ ही उसकी स्तुति से द्रवित होकर कृपापूर्वक उसके चर्म को धारण किया (कूर्म पुराण 1/30/12–18)। इस कथात्मक पृष्ठभूमि में शिव के दो या अधिक हाथों में गजचर्म दिखलाया गया है। शिव पुराण की रुद्र संहिता के पंचम खंड में इस कथानक के अनुसार गजासुर महिषासुर का पुत्र था। महिषासुर के वध के पश्चात् उसने कठोर तपस्या करके ब्रह्मा से यह वरदान प्राप्त किया कि वह काम के वशीभूत किसी भी स्त्री या पुरुष के हाथों मारा नहीं जा सकेगा। इस वरदान के फलस्वरूप वह सभी को पीड़ित करने लगा। तत्पश्चात् देवताओं के आग्रह पर कामजित शिव ने गजासुर का संहार किया साथ ही उसके गजचर्म को भी धारण किया (शिव पुराण 5/28)। वराह पुराण में शिव के स्थान पर उनके प्रमुख गण वीरभद्र द्वारा गजरूपी असुर के संहार का वर्णन मिलता है, जिसने गजचर्म शिव को अर्पित किया (वराहपुराणम् 27/18–20)। इसी प्रकार का उल्लेख मत्स्य पुराण (मत्स्य पुराण 55/16) एवं ब्रह्मांड पुराण (ब्रह्मांड पुराण 27/98) में भी मिलता है।

गजांतक का प्रतिमा विधान

गजांतक प्रतिमा का उल्लेख अंशुमदभेदागम, कारणागम, सुप्रभेदागम, शिल्परत्न, श्रीतत्वनिधि तथा अभिलाषितरत्नचिंतामणि आदि शिल्पग्रंथों में मिलता है। अंशुमदभेदागम के अनुसार इस प्रतिमा में शिव को चतुर्भुजी या अष्टभुजी दिखाया जाता है। चतुर्भुज रूप में उनके दो करों में गजचर्म तथा शेष में पाश व गजदंत होंगे। अष्टभुज शिव के करों में त्रिशूल, डमरू, पाश, दो भुजाओं में गजचर्म तथा विस्मय–मुद्रा में प्रदर्शित होंगी। शिव का बायाँ पैर गजरूपी असुर पर स्थिर होगा तथा दाहिना ऊपर उठा होगा। शिव गजचर्म को प्रभामंडल की तरह धारण किए होंगे। गज की पूँछ शिव मस्तक के ऊपर ठीक बीच में स्थिर होगी तथा उनके दो पैर किरणों की भाँति प्रदर्शित होंगे। इसी ग्रंथ के दूसरे विवरण में अष्टभुजी शिव के दाहिने तीन हाथों में त्रिशूल, खड्ग, गजदंत तथा बाएँ में कपाल, खेटक और घंट होगा। दो हाथों में पूर्ववत् गजचर्म होगा (राव 1916: 152–155)। शिल्परत्न में भी इसी प्रकार के प्रतिमा लक्षण का उल्लेख किया गया है।

गजमहामूर्तिनं वक्ष्ये सर्वाभरणभूषितम्।
पाशं च गजचर्म च दक्षपार्श्वकरद्वये।।
गजस्य श्रृंग चर्म च वामपार्श्वे करद्वये।
शूलं उमरुकं पाशं गजचर्म च दक्षिणे।।
गजश्रृगं कपालं च पाशं चर्म च वामतः।
शंभोर्वामाङ्घ्र्यधस्तात्तु गजमस्तकमेव हि।।
मुकुटस्योपरिष्टात्तु गजपुच्छं प्रकल्पयेत्।
पार्श्वयोर्गळपादं तु यथायुत्त्या तुकारयेत्।।
प्रभामंडलवच्छेषं गजचर्मप्रकल्पयेत्।
व्याघ्रचर्माम्बरोपेतं दुकूलवसनान्वितम्।।
सर्वाभरणसंसुक्तमतिरक्तप्रभान्वितम्।
सुस्थितं वामपादं तु गजवीरस्य मस्तके।।
(शिल्परत्न 22/106–111)

श्रीतत्वनिधि में शिव के दोनों हाथों में गजचर्म को लिए हुए हाथी के मस्तक पर नृत्य करते हुए दिखलाया गया है (चंपक 1981: 73)। अभिलषितार्थचिंतामणि (3/1/785) में गजासुर संहार मूर्ति में आठ, दस, सोलह एवं अठारह हाथ होने का उल्लेख है। इसी प्रकार का उल्लेख मत्स्यपुराण (259/3) में भी किया गया है। कुषाण काल में हाथ में अंकुश धारण किए हुए तथा हाथी पर बैठे हुए शिव का अंकन मिलता है। गुप्तकाल में सर्वप्रथम गजासुर वध प्रतिमा का उल्लेख मिलता है, जो भीतरगाँव से उपलब्ध मृत्फलकों में विद्यमान है (जोशी 2000: 42)। गजासुर वध की घटनास्थल दक्षिण भारत के तंजौर जिले का वलुवुर ग्राम माना जाता है (राव 1916: 149–155)। दक्षिण भारत

में गजांतक प्रतिमाएँ विशेष रूप से लोकप्रिय हुईं। पल्लव, चालुक्य, चोल एवं होयसलों ने गजांतक प्रतिमाओं का अंकन करवाया। उत्तर भारत में गजांतक स्वरूप के भाव को अंधकारि प्रतिमाओं में मिश्रित रूप में दो हाथों में गजचर्म दिखाकर व्यक्त किया गया।

प्रतिमाः गजातंक

प्राप्ति स्थलः झरौली, जिला दमोह, मध्य प्रदेश

प्रकृतिः बलुआ प्रस्तर

कालखंडः 11–12वीं शताब्दी (कलचुरि काल)

पंजीयन संख्याः 263

प्रस्तुत प्रतिमा (चित्र 1) रानी दमयंती संग्रहालय, दमोह में प्रदर्शित है, जो एक प्रस्तर फलक पर उत्कीर्ण की गई है। अष्टभुजी शिव को स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। अलंकृत जटाजूट धारण किए हुए शिव के कानों में कुंडल, गले में हार, हाथों में भुजबंध एवं कंकण, कमर में कटिसूत्र, उरुद्दाम, यज्ञोपवीत तथा घुटने तक लंबी वनमाला धारण किए हुए दिखलाया गया हैं। अष्टभुजी शिव अपने ऊपरी दोनों हाथों से गज के पैरों को पकड़ कर अपने सिर के ऊपर इस प्रकार उठाए हुए हैं कि प्रभामंडल जैसा स्वरूप आभासित हो रहा है। गज के शरीर से चर्म निकलने के कारण उसकी अस्थियाँ स्पष्टतः परिलक्षित हो रही हैं। वामामुखी गज के मस्तक, दंत, कर्ण एवं शूंड को भी अत्यंत सूक्ष्मता से अंकित किया गया है। शिव के दाहिने पार्श्व के हाथों में डमरू तथा शेष दोनों भुजाएँ खंडित हो गई हैं, किंतु कलाई का हिस्सा सुरक्षित है। प्रथम कलाई में लिया गया आयुध खंडित है तथा दूसरे में खड्ग धारण किए हुए हैं। शिव के बाएँ पार्श्व के दो हाथ क्रमशः कलाई एवं कोहनी से खंडित हैं। कलाई वाला हाथ संभवतः त्रिशूल का है, जिसका सिरा शेष है जो गजरूपी राक्षस को बेधते हुए दृष्टव्य है। शेष एक हाथ में कपाल का अंकन किया गया है। शिव का दाहिना पैर घुटने से नीचे एवं बायाँ पैर पूर्णतः खंडित है। शिव के दाहिने पार्श्व के सबसे निचले हिस्से के पादपीठ पर ललितासनमुद्रा में द्विभुजी शिवगण का अंकन है। प्रस्तुत प्रतिमा में शिव के मुख पर विस्मय भाव का अंकन किया गया है। वस्तुतः शिव का यह गजांतक स्वरूप जनकल्याण या अनुग्रह भाव को प्रदर्शित कर रहा है, जिसमें वे गजासुर का संहार करने के पश्चात् इस असुर को अपने गण के स्वरूप में स्वीकार करके इस पर अनुग्रह कर रहे हैं।

सरस्वती प्रतिमा

भारतीय संस्कृति में सरस्वती को वाणी, विद्या, ज्ञान, काव्य, संगीत एवं संस्कृति की देवी के रूप में मान्यता प्राप्त है। उनके अनेकों नाम मिलते हैं, जिनमें वाक्, वाग्देवी, वागीश्वरी, भारती, वाणी आदि प्रमुख हैं। हिंदू धर्म के साथ–साथ सरस्वती को बौद्ध एवं जैन धर्म में भी लोकसम्मत स्थान प्राप्त है। ऋग्वेद में अनेक स्थलों में सरस्वती को नदीरूप, मातृरूप एवं देवीरूप में वर्णित किया गया है। इन तीनों रूपों का विवरण ऋग्वेद के एक ही ऋचा (2/14/16)– 'अम्बितमें नदीतमे देवितमे सरस्वती' में उपलब्ध होता है। ब्राह्मण ग्रंथों में शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण, तैतिरीय ब्राह्मण इत्यादि में सरस्वती से संबंधित निर्देश प्राप्त होते हैं।

भारतीय कला में सरस्वती का प्राचीनतम अंकन भरहुत की वेदिका के एक स्तंभ पर मिलता है, जिसमें सम्मुख स्थिति में पूर्ण विकसित कमल में खड़ी और हाथ में सात तार की वीणा बजाती देवी का स्पष्ट अंकन हुआ है (बनर्जी 1956: 377)। मथुरा के कंकाली टीले से द्विभुजी सरस्वती की लेखयुक्त प्रतिमा प्राप्त हुई है (सहाय 1975: 145)। पालकाल में सरस्वती का अंकन बहुलता से हुआ है। ज्ञान की देवी सरस्वती अपनी विशिष्टता के कारण संपूर्ण भारतवर्ष में वैदिक काल से लेकर आज तक पूजी जाती है। सरस्वती की चार भुजाएँ चारों दिशाओं के प्रतीक हैं, जो सर्वव्यापी के लक्षण हैं। एक हाथ में पुस्तक स्थूल रूप में ज्ञान प्राप्ति का प्रधान साधन है और आध्यात्मिक पक्ष में सर्वज्ञानमय वेद का प्रतिरूप है। दूसरे हाथ में माला स्थूल रूप में एकाग्रता का चिह्न तथा वीणा स्थूल रूप में जीवन संगीत

का प्रतीक है। सरस्वती कमल पर बैठी रहती हैं। कमल सृष्टि का प्रतीक है। इनका वाहन हंस है। इसका निष्कलंक उज्ज्वल वर्ण और नीर–क्षीर विवेक सरस्वती के उपासकों के लिए निष्कलंक चरित्र और गुण–दोषों को जानकर गण को ग्रहण करने का प्रतीक है। इनका श्वेत वस्त्र पवित्रता और सात्विकता का द्योतक है (सिन्हा 2010: 180)।

सरस्वती का प्रतिमा विधान

सरस्वती प्रतिमाओं का प्रतिमा विधान विभिन्न पुराणों, आगम ग्रंथों तथा शिल्पग्रंथों में मिलता है। पुराणों में मत्स्यपुराण, अग्निपुराण एवं विष्णुधर्मोत्तरपुराण तथा शिल्पशास्त्र ग्रंथों में रूपमंडल, देवतामूर्तिप्रकरण, अपराजितपृच्छा और रूपमंडन महत्वपूर्ण हैं। सरस्वती प्रतिमा का निर्माण शास्त्रोक्त विधि से होना चाहिए। अपराजितपृच्छा (230/8–16) में सरस्वती को पद्मासन पर विराजमान, उनके हाथों में माला, वीणा, पुस्तक एवं कमंडलु हों। सरस्वती को नीलकंठ वाली, श्वेत वर्ण वाली, मस्तक पर चंद्रमा धारण किए हुए बतलाया गया है। देवतामूर्तिप्रकरण (8/69–85) में भी सरस्वती को एक मुख, चार हाथ, मस्तक पर मुकुट, प्रभामंडल से सुशोभित एवं कुंडल धारण किए हुए बतलाया गया है। इसमें सरस्वती के बारह स्वरूपों का वर्णन किया गया है, जिनमें महाविद्या, महावाणी, भारती, सरस्वती, आर्या, ब्राह्मी, महाधेनु, देवगर्भा, ईश्वरीय, महालक्ष्मी, महाकाली एवं महास्वरस्वती हैं। रूपमंडन (5/61–62) के अनुसार महाविद्या देवी एक मुखवाली, चतुर्भुजी, हाथ में क्रमशः अक्षमाला, कमल, वीणा एवं पुस्तक धारण की हो। मस्तक पर मुकुट, कान में कुंडल प्रभायुक्त हो जबकि श्वेत वर्ण सरस्वती देवी के चतुर्भुज में वरदमुद्रा, कमल, वीणा और पुस्तक देने का विधान है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण (64/1–3) में सरस्वती को वस्त्रालंकारों से सुसज्जित, गौरवर्णवाली, सौम्य मुखाकृति, समपाद में खड़ी और चतुर्भुज में दाहिने हाथ में अक्षमाला, पुस्तक और बाएँ हाथ में वीणा, कमंडलु धारण किए हों। मत्स्यपुराण (66/6) में सरस्वती को श्वेत वस्त्रों और अलंकरणों से सुसज्जित करते हुए, ब्रह्मा की ही भाँति हंसारूढ और ब्रह्माणी जैसे स्वरूप वाली, ब्रह्मा की भाँति चार हाथों में पुस्तक, अक्षमाला, पद्म धारण किए का निर्देश है। अग्निपुराण (50/16) में सरस्वती को चतुर्भुज बताया गया है, जिनके हाथों में पुस्तक, अक्षमाला एवं दोनों हाथों में वीणा धारण की हैं।

प्रतिमाः सरस्वती
प्राप्ति स्थलः दौनी, जिला दमोह, मध्य प्रदेश
प्रकृतिः लाल बलुआ प्रस्तर
कालखंडः 10–11वीं शताब्दी (कलचुरि काल)
पंजीयन संख्याः 142

प्रस्तुत प्रतिमा (चित्र 2) रानी दमयंती संग्रहालय, दमोह में प्रदर्शित है, जो एक प्रस्तर फलक पर त्रिभंगमुद्रा में उत्कीर्ण की गई है। द्विभुजी सरस्वती वीणा धारण की हुई हैं। अंग–प्रत्यंग से यह प्रतिमा आभूषणों से सुशोभित है। सिर पर केश जूड़े में बंधा है, जो अलंकृत जटामुकुट से शोभित है। कर्णाभरण, हारावली और पयोधर पर पड़ी हुई मुक्तामाला, कटिमेखला एवं लंबी वनमाला का सुंदर अंकन किया गया है। सरस्वती की मुखमुद्रा सौम्य है, जो सात्विक परंपरा के अनुरूप है। सरस्वती प्रतिमा के उभय पार्श्वो में मांगलिक सिंह व्यालों का अंकन किया गया है, जिसका निचला पैर गज के ऊपर है। सरस्वती प्रतिमा के पादपीठ पर दोनों पार्श्वों में आसनस्थ गज का अंकन किया गया है।

अभिज्ञान राम प्रतिमा

भारतीय संस्कृति एवं धर्म पर राम की पौराणिक कथा का अत्यधिक प्रभाव रहा है। रामायण में उनकी महानता, कर्त्तव्यपरायणता, आज्ञाकारिता, एक महान विचारक एवं राजनीतिज्ञ के रूप में वर्णन किया गया है। राम, वैष्णव धर्म के विकास क्रम में विष्णु के ही अवतार रूप में निरूपित हुए। विष्णु, वायु एवं ब्रह्मांड आदि पुराणों में विष्णु का राम के रूप में अवतार वर्णित है।

अभिज्ञान राम का प्रतिमा विधान

प्रतिमाशास्त्रीय ग्रंथों में राम के प्रतिमा विधान का वर्णन मिलता है। अग्नि पुराण राम को द्विभुजी एवं चतुर्भुजी दोनों ही रूपों में प्रदर्शित करने का निर्देश देता है।

रामश्चापि शरी खड्गी शंखी व द्विभुजीस्मृतः।।
(अग्नि पुराण 49/6)

रूपमंडन (3/27) में श्याम वर्ण राम की धनुषबाणधारी द्विभुजी प्रतिमा का उल्लेख है। बैखानस आगम में भी राम की द्विभुजी प्रतिमा का विवरण मिलता है। इसमें राम त्रिभंग मुद्रा में खड़े हों और उनके दाहिने हाथ में बाण तथा बाएँ हाथ में धनुष का अंकन हों। वे किरीट–मुकुट तथा अन्य आभूषण से अलंकृत हों। उनके दक्षिण पार्श्व में सीता खड़ी हों, जिनका सिर धम्मिल और करंड मुकुट से अलंकृत हो उनके बाएँ हाथ में नीलोत्पल पुष्प हो और दाहिना हाथ प्रसारित हों। वे अपने प्रफुल्ल लोचनों से राम को देखती हों। राम सीता के साथ लक्ष्मण और हनुमान भी प्रदर्शित हों (राव 1914: 192)। विष्णुधर्मोत्तर पुराण (62/63/85) एवं वृहत्संहिता (58/30) में भी राम के प्रतिमा लक्षणों का वर्णन किया गया है। राम की स्वतंत्र प्रतिमाएँ सर्वप्रथम गुप्तकाल में निर्मित हुई।

प्रतिमाः अभिज्ञान राम
प्राप्ति स्थलः दौनी, जिला दमोह, मध्य प्रदेश
प्रकृतिः बलुआ प्रस्तर
कालखंडः 10–11वी शताब्दी ईसवी
पंजीयन संख्याः 94

प्रस्तुत प्रतिमा (चित्र 3) रानी दमयंती संग्रहालय, दमोह में प्रदर्शित है। अभिज्ञान राम को एक प्रस्तर फलक पर दो अलंकृत स्तंभों के मध्य उत्कीर्ण किया गया है, जिसमें वे त्रिभंगमुद्रा में हैं। राम अपने दाहिने एवं बाएँ दोनों हाथों से बाण को पकड़े हुए हैं। बाण का अग्रभाग (फण) नीचे की ओर बाएँ हाथ में है। धनुष का अंकन बाएँ कंधे से लटकता हुआ पैरों तक दिख रहा है। प्रभामंडल अलंकृत है किंतु केश सज्जा को साधारण ढंग से सज्जित किया गया है। राम के कानों में कुंडल, गले में हार, हाथों में कंकण एवं भुजबंध, कटिमेखला, ऊरुभंग एवं वनमाला धारण किए हुए हैं। भगवान राम के दाहिने पार्श्व में पादपीठ पर स्थानक एवं आसनस्थ दोनों मुद्राओं में अंजलीबद्ध कपि का अंकन किया गया है। बाएँ पार्श्व में भी पादपीठ पर धनुष एवं पैरों के मध्य कपि का अंकन किया गया है, जो ऊपर की ओर मुख किए हुए राम को देख रहा है। ये अंकन अलंकृत स्तंभ के मध्य में प्रदर्शित किया गया है, जिसमें वृक्ष एवं लताओं को भी दर्शाया गया है। अलंकृत स्तंभ के मध्य भाग में दोनों ओर समान रूप से कीर्तिमुख का अंकन किया गया है। इन स्तंभों के बाह्य भाग में दोनों तरफ मांगलिक पशुओं का अंकन है। बाई तरफ का स्तंभ ऊपर से खंडित हो गया है।

हरिहरार्क प्रतिमा

प्राचीन भारत में विभिन्न संप्रदायों के बीच धार्मिक वैमनस्य को समाप्त कर सहिष्णुता प्रदर्शित करने के लिए संयुक्त प्रतिमाओं का निर्माण हुआ। जिनका मुख्य उद्देश्य विभिन्न मत–मतांतरों से ऊपर उठकर सामाजिक और धार्मिक सौहार्द की स्थापना करना था। इस प्रकार की प्रतिमाओं में दो या दो से अधिक देवताओं को एक साथ संयुक्त कर दर्शाया गया है। अपनी विलक्षणता को रूपायित करने वाली इन प्रतिमाओं में अलग–अलग देवताओं की विशेषताएँ यथा शरीरांग, आयुध, वाहन आदि को एक साथ अंगीकृत किया जाता है। इस प्रकार से संबंधित प्रतिमा को संपृक्त, संघाट, देहार्थधारिन्, कांतासंयुक्त एवं एकीभूतवपु आदि नामों से अभिहित किया जाता है। इनमें दो से अधिक संप्रदायों से संबंधित प्रतिमाओं में हरिहर पितामह, हरिहरार्क पितामह, हरिहर हिरण्यगर्भ एवं हरिहरार्क प्रमुख हैं। ब्राह्मण अवधारणा के अनुसार 'त्रिदेव' ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश सृष्टि के तीन प्रमुख कार्यों उत्पत्ति या रचना, पालन और संहार

को एक ईश्वर के रूप में प्रतिपादित करते हैं। भगवान रुद्रदेव ने प्रयोजन के निमित्त अपनी एक मूर्ति को तीन रूपों में धारण किया, जिनमें कार्यरूप में विष्णु, क्रियारूप में ब्रह्मा एवं कारणरूप में महेश्वर हैं।

कार्य विष्णुः क्रिया ब्रह्मा कारणं तु महेश्वरः।
प्रयोजनार्थ रुद्रेण मूर्तिरेका त्रिधा कृता।।
कृष्णयजुर्वेद, रुद्रयोपनिषद् 5/10/15

कालांतर में त्रिमूर्ति की इस संयुक्त अवधारणा में सूर्य को भी समाहित कर लिया गया। मार्कण्डेयपुराण (109/7) में प्रकाशवान सूर्य के विद्या स्वरूप को ही ब्रह्मा, शिव और विष्णु का शरीर बताया गया है। शारदातिलक तंत्र (14/14–42) में ब्रह्मा, विष्णु और शिव के साथ सूर्य का उल्लेख हुआ है। इसी ग्रंथ में वर्णित है कि सूर्य ध्यान साधना का आधार है। वह ब्रह्मा, विष्णु और शिव से एकरूप है, इसलिए सूर्य आराधना के साथ इन सबकी भी सम्मिलित आराधना होनी चाहिए।

वादेत्पादं चतुर्थ्यांतं ब्रह्माविष्णुशिवांतकम्।
सौराय योगपीठाय नमः पादामनंतरम्।।
पीठमंत्रो यमाख्यातो दिनेशस्य जगत्पतेः।।
(शारदा तिलकतंत्र 9/7)

भारतीय कला में शिव, विष्णु एवं सूर्य के संयुक्त आलेखन वाली प्रतिमाओं को हरिहरार्क की संज्ञा दी गई है। इस मूर्ति स्वरूप में इन देवों के आयुध, वाहन एवं सामान्य लक्षण एक साथ प्रदर्शित किए जाते हैं। हरिहर के साथ सूर्य की एकात्मकता का उल्लेख शिल्पग्रंथों में भी मिलता है। हरिहरार्क की संयुक्त प्रतिमाएँ चिदम्बरम मंदिर, लिम्बोजी माता मंदिर (उत्तरी गुजरात) प्रतापेश्वर मंदिर (खजुराहो) आदि में प्रदर्शित हैं। दमोह जिले के बरौदा कला एवं दौनी नामक पुरास्थलों से सर्वेक्षण द्वारा हरिहरार्क की प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं।

प्रतिमाः हरिहरार्क
प्राप्ति स्थलः बरौदा कला, जिला दमोह, मध्य प्रदेश
प्रकृतिः लाल बलुआ प्रस्तर
कालः पूर्वमध्यकाल

प्रस्तुत प्रतिमा (चित्र 4) पंचरथ पादपीठ के ऊपर स्थानक रूप में प्रदर्शित किया गया है। यह प्रतिमा हरिहरार्क से संबंधित है। इस त्रिमुखी हरिहरार्क प्रतिमा में मुख्य देवता के रूप में अर्क (सूर्य) को दर्शाया गया है, जबकि उनके बाई तरफ हरि (विष्णु) एवं दाहिनी तरफ हर (शिव) का अंकन किया गया है। प्रतिमा विज्ञान मे हरिहरार्क का अंकन सामान्यतया उनके मुखाकृति, आयुध एवं वाहन के आधार पर किया जाता है। इस प्रतिमा को छः भुजी निर्मित किया गया है तथा इन छः हाथों में शिव एवं विष्णु तथा सूर्य के आयुधों को बनाया गया है। प्रस्तुत प्रतिमा के दाहिने पार्श्व में हर (शिव) का मुख दर्शाया गया है, जिसमें वे जटाजूट एवं कानों में कुंडल धारण किए हुए हैं। वे सौम्य मुखाकृति में प्रदर्शित हैं। शिव के दाहिने मध्य हाथ में डमरू तथा उसके निचले हाथ वरदमुद्रा में है, जो पूर्णतः स्पष्ट नहीं है। हरिहरार्क प्रतिमा का बायाँ मुख विष्णु का है, जिसमें वे मुकुट एवं कुंडल धारण किए हुए हैं। उनके मुख के सामने लंबवत् चक्र का अंकन किया गया है। सबसे निचले हाथ में शंख धारण किए हुए हैं। प्रतिमा का मध्यमुख सूर्य का दर्शाया गया है, जिसका ऊपरी भाग खंडित होने के कारण ग्रामीणों द्वारा सीमेंट से लेप दिया गया है। सूर्य के दाहिने हाथ में सनालयुक्त कमल एवं बायाँ हाथ खंडित हो गया है। वे गले में तीन लड़ियोंयुक्त हार, कंधे से घुटने तक लटकती हुई वनमाला, उत्तरीय, मेखला एवं उपानह धारण किये हुए हैं। हरिहरार्क प्रतिमा के दोनों पार्श्वों में पादपीठ संभवत उनकी पत्नियों एवं अनुचरों का अंकन किया गया है।

प्रतिमाः हरिहरार्क
प्राप्ति स्थलः दौनी, जिला दमोह, मध्य प्रदेश
प्रकृतिः लाल बलुआ प्रस्तर
कालः पूर्वमध्यकाल

प्रस्तुत हरिहरार्क प्रतिमा (चित्र 5) एक प्रस्तर फलक पर दो अलंकृत स्तंभों के मध्य प्रदर्शित है, जिसमें सूर्य को मुख्य देवता के रूप में प्रदर्शित किया गया है। साथ ही शिव (हर) एवं विष्णु (हरि) को उनके वाहन एवं आयुध के प्रतीकात्मक स्वरूप से दर्शाया गया है। बायाँ अलंकृत स्तंभ के ऊपर मांगलिक कलश बनाया गया है जिसके निचले हिस्से में चँवर धारिणी उपासिका का अंकन है। जबकि दाहिनें स्तंभ का अग्रभाग खंडित है तथा निचले भाग में चँवर धारिणी उपासिका है। इन दोनों स्तंभों के उभय पार्श्वों में व्याल पर सवार वाहक का अंकन किया गया है। बाईं तरफ के व्याल के नीचे क्रमशः स्थानक गणेश व गज का अंकन है। स्तंभों के मध्य में षष्टभुजी सूर्य सप्ताश्वरथ पर समभंगमुद्रा में खड़े हैं। हरिहरार्क का प्रभामंडल सादा है। सूर्य के पैरों के समीप उभय पार्श्वों में उनकी पत्नियाँ उषा व प्रत्यूषा प्रदर्शित हैं। उनकी स्निग्ध मुखाकृति, अर्द्धोन्मीलित नेत्र एवं धनुष की भाँति भौंहें चित्त को आकर्षित करती है। सूर्य देवता ने किरीट मुकुट, कुंडल, हार, केयूर, कंकण, अव्यंग, वनमाला और उपानह धारण किए हुए हैं। सूर्य प्रतिमा के दोनों स्वाभाविक हाथों में सनाल पद्म है। दाहिने स्वाभाविक हाथ की पद्मनाल खंडित है। बाएँ हाथों में चक्र और शंख हैं तथा दाएँ हाथों में खट्वांग एवं संभवतः कमंडलु का अंकन है। इस प्रतिमा में शिव के वाहन नंदी को बाईं तरफ पशु रूप में तथा विष्णु के वाहन गरुड़ को मानवारूप में दर्शाया गया है। इस प्रकार सूर्य की इस संघाट प्रतिमा में अन्य धार्मिक संप्रदायों का अंकन प्रमुख देवों के प्रतीक रूप में हुआ है।

ध्येयः सदा सवितृमंडलमध्यवर्ती नारायणः
सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुंडलवान् किरीटीहारी
हिरण्यमयवपुर्धृतशंखचक्रः।।
ऊँ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तत्र आ सुव।।

(ऋग्वेद 5/82/5)

बुद्ध प्रतिमा

प्रतिमाः बुद्ध
प्राप्ति स्थलः वंशीपुर, जिला दमोह, मध्य प्रदेश
प्रकृतिः लाल बलुआ प्रस्तर
कालः पूर्वमध्यकाल
पंजीयन संख्याः 285

प्रस्तुत प्रतिमा (चित्र 6) रानी दमयंती संग्रहालय, दमोह में प्रदर्शित है। यह प्रतिमा मध्य प्रदेश के दमोह जिले के वंशीपुर पुरास्थल से प्राप्त हुआ है। इस प्रतिमा में बुद्ध को वज्रासन मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। बोधिवृक्ष के नीचे जिस चबूतरे या आसन पर बैठकर सिद्धार्थ गौतम 'बुद्ध' हो गए उसे वज्रासन के नाम से पुकारा जाता है। बोधिवृक्ष और उसके तने के पास वज्रासन रखकर कभी–कभी कलाकारों ने संबोधि की घटना का परिचय दिया है। प्रस्तुत प्रतिमा में बुद्ध का मुंडित मस्तक अथवा उष्णीष पर शंख या कौड़ी जैसी बालों की घुमावदार रचना (कपर्द) का अंकन है। बुद्ध के संदर्भ में उष्णीष शब्द से तात्पर्य पगड़ी या साफे से न होकर अपितु मस्तक के ऊपर ऊभरी हुई गोलाई है, जो उनके शरीर का नैसर्गिक भाग है, तथा जिसकी गिनती महापुरुष के बत्तीस लक्षणों के अंतर्गत की जाती है। बुद्ध के भौहों के बीच में ऊर्णा अर्थात एक वर्तुलाकार चिह्न का अंकन है। ललितविस्तर के अनुसार मारपराजय के समय बोधिसत्व सिद्धार्थ की ऊर्णा से एक ज्योति प्रकट हुई, जिसके कारण मारभवन कंपित हो उठे थे (वैद्य 1958: 74)। बुद्ध के विशाल वक्षस्थल के बाएँ कंधे पर सिलवटदार उत्तरीय वस्त्र को दिखलाने के लिए लकीर खींची गई है। बायाँ कंधा वस्त्र से ढँका हुआ है, जिसका अंकन बाएँ हाथ के निचले हिस्से पर भी दिखाई दे रहा है। अर्द्धनिमीलित नेत्र एवं मुख पर हल्का स्मित है।

बुद्ध एक ऊँचे सनालयुक्त वज्रकमल पीठिका (वज्रपर्यंक) पर पद्मासन में ध्यानस्थ हैं। ध्यानमुद्रा में बुद्ध के पैरों की

पालथी, दोनों हाथ नाभि के पास, हथेलियाँ एक दूसरे पर रखी हुई है। बुद्ध का दाहिना हाथ खंडित हो गया है। बुद्ध की शारीरिक रचना में कोमलता, मुखमंडल पर मृदु–सौम्यता एवं शांति, आध्यात्मिक तेज, काया में तरलता, प्रलंबकर्णपाश, आजानुबाहु के साथ ही परिष्कृत वस्त्र संरचना का अंकन है, जिसमें वस्त्रों की चुभटें पतली एवं कलापूर्ण अवलोकित हो रही हैं। पादपीठिका के निचले हिस्से में दोनों ओर सिंह का अंकन किया गया है, जो पादपीठ को उठाए हुए प्रतीत हो रहे हैं। अप्राकृतिक मुद्रा में प्रदर्शित सिंहों की आकृति में गति एवं चपलता का स्पष्ट सामंजस्य है। पादपीठ के दोनों पार्श्वों में अंजलीमुद्रा में उपासक एवं उपासिका का अंकन किया गया है। बुद्ध प्रतिमा के सबसे ऊपरी पार्श्वों में दो गणों का अंकन किया गया है। दाहिनी तरफ का गण द्विभुजी है, जिसके हाथ में धनुष का अंकन है। बाईं ओर की आकृति का दाहिना हाथ वरदमुद्रा में तथा बायाँ हाथ एवं सिर खंडित हैं। संभवत यहाँ मार विजय का अंकन किया गया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त कला साक्ष्यों के आधार पर दमोह क्षेत्र के धार्मिक समृद्धि के विविध पहलुओं का ज्ञान प्राप्त होता है। शैव प्रधान क्षेत्र होने के कारण यहाँ शिव से संबद्ध अनेक स्वरूपों वाली प्रतिमाएँ प्राप्त होती हैं। झरौली से प्राप्त गजांतक की प्रतिमा पूर्णतः पौराणिक कथानकों (कूर्म एवं वराह पुराण) पर आधारित है। यह प्रतिमा इसलिए विशिष्ट है कि इसमें शिव गजचर्म उत्तरीय की भाँति ओढ़े हुए तथा मृत गज का संपूर्ण ढांचा उठाए हुए दिखाया गया है। इस क्षेत्र में कलचुरि काल से संबद्ध सरस्वती की स्वतंत्र प्रतिमाएँ अत्यंत नगण्य मिली हैं। वीणाधारी द्विभुजी सरस्वती के सौम्य भाव को अत्यंत कलात्मक दृष्टि से उत्कीर्ण किया गया है। इसी प्रकार वनवासी राम की प्रतिमा में परंपरागत मांगलिक चिह्नों व्याल, गज एवं कीर्तिमुख के अंकन के साथ–साथ शिल्पी ने वनस्पतियों के अतिरिक्त भावांकन का उत्कीर्णन सुरुचिपूर्वक किया है। दमोह जिले के बरौदा कला एवं दौनी पुरास्थल से सर्वेक्षण से उपलब्ध हरिहरार्क प्रतिमाएँ अपने विशिष्ट कलात्मक अंकन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

पूर्व मध्यकाल में सूर्योपासना की लोकप्रियता के कारण अन्य धार्मिक संप्रदायों में समन्वय का प्रयास हुआ। यह प्रवृत्ति सूर्य प्रतिमाओं में विशेष रूप से परिलक्षित हुई है। ये प्रतिमाएँ धार्मिक स्वरूपों की अभिव्यक्ति का समन्वयवादी रूप है। इनमें वैचारिक विशिष्टता, परंपराओं के साथ–साथ धार्मिक सहिष्णुता का स्वरूप भी दृष्टिगत होता है। इस क्षेत्र में विविध धार्मिक मत–मतांतरों के बीच सद्भावना को प्रेषित करने के लिए शिल्पकारों ने इस प्रकार की प्रतिमा का निर्माण किया होगा। हरिहरार्क प्रतिमा का अंकन इसी धार्मिक सहिष्णुता की परिणति है, जिनके निर्माण का मुख्य आधार शैव, वैष्णव एवं सौर संप्रदायों में धार्मिक समन्वय एवं एकात्मता को दर्शाता था। साथ ही इस प्रकार की संयुक्त प्रतिमाओं ने भारत की मौलिक सांस्कृतिक चेतना को अक्षुण्ण बनाने एवं उसे सूत्रबद्ध करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दमोह क्षेत्र में बौद्ध धर्म से संबंधित एकमात्र केंद्र वंशीपुर है, जहाँ बौद्ध मठ के साक्ष्य भी प्राप्त हुए है। यहाँ से प्राप्त बौद्ध प्रतिमा इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के प्रसार को दर्शाता है। ये सभी प्रतिमाएँ अपने विशिष्ट अंकनों के लिए महत्वपूर्ण हैं। इनका अंकन प्रतिमाशास्त्रीय विधान के अनुरूप किया गया है, जिसमें कलात्मक सौंदर्य के साथ–साथ आंचलिक विशिष्टताएँ भी निहित हैं। पूर्व मध्यकाल में तत्कालिन राजवंशों द्वारा प्रश्रित यह क्षेत्र अपने कला वैभव, धार्मिक समन्वय एवं सांस्कृतिक चेतना के कारण भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

संदर्भ सूची

आपटे, हरि नारायण (संपा०), 1907, *मत्स्य पुराण*, पूनाः आनंद आश्रम संस्कृत सीरीज।

एवलान, आर्थर (संपा०), 1933, *तांत्रिक टेक्सटः शारदा तिलकतंत्र*, भाग–1, कलकत्ताः आगमानुसंधान समिति।

गुप्त, आनंद स्वरूप (संपा०), 1971, *कूर्म पुराण*, वाराणसीः ऑल इंडिया काशीराज ट्रस्ट।

चंपक, लक्ष्मी, आर०, 1981, *वैष्णव आइकनोग्राफी इन द तमिल कंट्री*, नई दिल्लीः ओरिएंट लॉगमैन।

जोशी, नीलकंठ पुरुषोत्तम, 2000, *प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञानः प्रांरभ से गुप्तकाल तक की ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन धर्मों की प्रमुख मूर्तियों का अध्ययन*, पटनाः बिहार राष्ट्र–भाषा परिषद्।

पोपटभाई, अंबाशंकर मांकड (संपा०), 1950, *अपराजितपृच्छा (भुवनदेवकृत)*, बडौदाः गायकवाड़ ओरिएंटल सीरीज।

प्रसाद, हनुमान (संपा०), 1978, *शिव पुराण*, गोरखपुरः गीताप्रेस।

बनर्जी, जे० एन०, 1956, *द डेवलपमेंट ऑफ हिंदू आइकनोग्राफी*, नई दिल्लीः मुंशीराम मनोहर लाल पब्लिशर्स।

मित्र, राजेन्द्र लाल (संपा०), 1873–79, *अग्नि पुराण*, बिब्लियोथिया इंडिका, कलकत्ताः एशियाटिक सोसाइटी।

राव, टी० ए० गोपीनाथ, 1914, *एलीमेन्ट्स ऑफ हिंदू आइकनोग्राफी*, जिल्द–I, भाग–I, मद्रासः द लॉ प्रिंटिंग्स हाउस।

राव, टी० ए० गोपीनाथ, 1916, *एलीमेन्ट्स ऑफ हिंदू आइकनोग्राफी*, जिल्द–II, भाग–I, मद्रासः द लॉ प्रिंटिंग्स हाउस।

वैद्य, पी० एल० (संपा०), 1958, *बौद्ध संस्कृत ग्रंथावलीः ललितविस्तर*, नं० 1, दरभंगाः मिथिला विद्यापीठ।

शास्त्री, श्रीहृषीकेश (संपा०), 1982, *वराहपुराणम्*, वाराणसीः चौखंभा अमर भारती प्रकाशन।

शास्त्री, जगदीश (संपा०), 1972, *ब्रह्मांड पुराण*, वाराणसीः मोतीलाल बनारसी दास।

शास्त्री, एस० के० (संपा०), 1929, *शिल्परत्न (श्रीकुमारकृत)*, त्रिवेन्द्रम संस्कृत सीरीज XCVIII, त्रिवेन्द्रमः गवर्नमेंट प्रेस।

शास्त्री, धर्मेन्द्र नाथ (अनु०), 1983, *मार्कण्डेय महापुराण*, मेरठः साहित्य भंडार।

शास्त्री, वी० सुब्रमण्यम एवं एम० रामकृष्ण भट (अनु०), 1947, *बृहत्संहिता (वराहमिहिरकृत)*, बैंगलोर सिटी।

शाह, प्रियबाला (संपा०), 1958, *विष्णुधर्मोत्तर पुराण* (कृष्णद्वैपायनव्यासकृत), बडौदाः ओरिएंटल इंस्टिट्यूट।

श्रीगोण्डेकर, जी० के० (संपा०), 1939, *अभिलषितार्थचिंतामणि* (सोमेश्वरदेवकृत), द्वितीय भाग, बड़ौदाः ओरिएंटल इंस्टिट्यूट।

श्रीवास्तव, बलराम (संपा०), 1964, रूपमंडन *(श्रीसूत्रधारमंडनविरचित)*, वाराणसीः मोतीलाल बनारसीदास

सांख्यतीर्थ, उपेन्द्र मोहन, (संपा०), 1936, *देवतामूर्तिप्रकरण एंड रूपमंडन* (श्रीसूत्रधारमंडनविरचित), कलकत्ताः मेट्रोपोलिटन प्रिंटिंग एंड पब्लिशिंग हाउस।

सहाय, भगवंत, 1975, *द आइकनोग्राफी ऑफ माइनर हिंदू एंड बुद्धिस्ट डिटिज*, नई दिल्लीः अभिनव पब्लिकेशन।

सिन्हा, पुष्पा, 2010, *बिहार की प्राचीन हिंदू प्रतिमाएँ*, पटनाः बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।

त्रिवेदी, आर० जी० (अनु०), 1954, *ऋग्वेद संहिता*, प्रयागः इंडियन प्रेस।

यादव, चित्र 1: गजांतक प्रतिमा, झरौली, मध्य प्रदेश, 11वीं–12वीं शताब्दी ईसवी

यादव, चित्र 2: सरस्वती प्रतिमा, दौनी, मध्य प्रदेश, 11वीं–12वीं शताब्दी ईसवी

यादव, चित्र 3: अभिराम प्रतिमा, दौनी, मध्य प्रदेश, 10वीं–11वीं शताब्दी ईसवी

यादव, चित्र 4: हरिहरार्क प्रतिमा, बरौदा कल, मध्य प्रदेश, पूर्वमध्यकाल

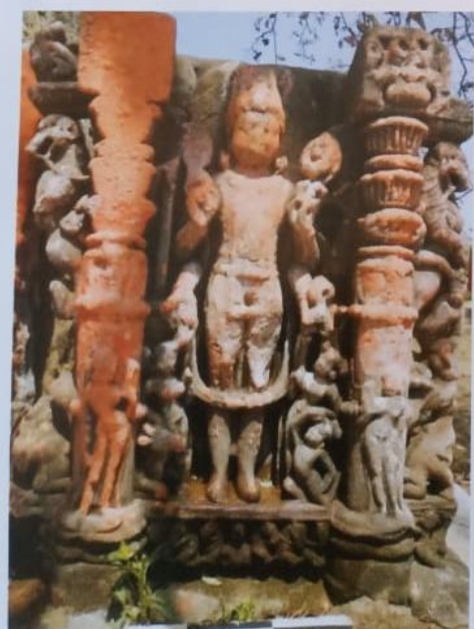

यादव, चित्र 5: हरिहरार्क प्रतिमा, दौनी, मध्य प्रदेश, पूर्वमध्यकाल

यादव, चित्र 6: बुद्ध प्रतिमा, वंशीपुर, मध्य प्रदेश, पूर्वमध्यकाल